

इकाई-2

विषय के ज्ञान का मूल्यांकन : सामाजिक राजनैतिक विश्लेषण

संरचना

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 शालेय स्तर पर विषयों के प्रतिमान
- 1.4 विषयों का विश्लेषण मूल्यांकन एवं विषयांतर्गत ज्ञान की आलोचना –
 - 1.4.1 प्राकृतिक विज्ञान एवं गणित
 - 1.4.2 इतिहास
 - 1.4.3 भूगोल
 - 1.4.4 शिल्पकारिता
 - 1.4.5 भाषा
- 1.5 भौक्षिक विषयों का मूल्यांकन एवं समीक्षा
- 1.6 सारांश
- 1.7 गहन चिंतन हेतु प्रश्न
- 1.8 आपके प्रगति की जाँच के लिए उत्तर
- 1.9 संदर्भ ग्रंथ एवं वाचन संकेत –

पाठ्यक्रम का मूल्यांकन

1.1 प्रस्तावना —

सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आधार है बालकों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन। वांछनीय परिवर्तन तभी संभव है जब हम उन्हें शिक्षण अनुभव भी प्रदान करें। बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में क्रिया एवं प्रतिक्रिया एक विशेष माध्यम है जो कि उन्हें कार्य करने के अवसर प्रदान करेंगे। पाठ्यक्रम के उपर्युक्त निर्धारित लक्ष्य तभी हासिल हो पायेंगे जब हम उनकी रुचि, क्षमता, को ध्यान में रखे, इन सभी बातों के लिए संशोधन की आवश्यकता है। परन्तु यह दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है कि वर्तमान पाठ्यक्रम में तो बदलाव हुआ है परन्तु मूल्य स्थिर है। आज किताबी ज्ञान पर बल दिया जा रहा है जो कि जीवन मूल्य एवं नागरिकों के विकास पर आधारित नहीं है आज भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर नए पाठ्यक्रम की रचना की जानी चाहिए। हमारी शैक्षिक प्रक्रिया की मुख्य समस्या उपर्युक्त पाठ्यक्रम की अनुपस्थिति है। उपरोक्त सभी बिंदुओं में मूल्यांकन काफी सहायक साबित हो सकता है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य उपलब्धि के साथ सीखने के अनुभव पर निर्भर है जिसका आधार पर विषयानुसार छात्रों में वांछनीय परिवर्तन लाना है। छात्रों में पाठ्यक्रम के अंतर्गत योग्यता की क्षमता का विकास करना है। नये ज्ञान को सीखने के लिए शिक्षक के द्वारा विशेष अनुशासन या विषय में उन्नत किया जाना चाहिए। छात्रों की आवश्यकता के अनुसार मूल्यांकन के दौरान विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

मूल्यांकन कई कारकों को ध्यान में रखकर किया जाता है एक प्रभावी सामग्री और पाठ्यक्रम की निर्मिती के लिए विवेकपूर्णता की आवश्यकता है। एक पाठ्यक्रम में शैक्षिक उद्देश्यों को लेकर एवं व्यवहार परिवर्तन को ध्यान में रखकर मॉडल प्रस्तुत किया गया है। पाठ्यक्रम के चयन में मौलिक अवधारणा का संतुलित एवं व्यापक समावेश है एवं सामाजिक तर्क से भरा हुआ है। गतिविधियाँ एवं आंतरिक मूल्यों पर भी

जोर देना चाहिए जब अधिगम करने योग्य सार्थक, विचाराधीन एवं विषय से संबंधित हो।

1.2 उद्देश्य –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होंगे –

- विषय ज्ञान के मूल्यांकन का विवरण करना।
- शालेय-विषयों का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग को समझना।
- शालेय –विषयों के मूल्यांकन एवं सामाजिक विश्लेषण के महत्व की स्वीकार करना।
- शालेय विषयों की समालोचना अपने शब्दों में कर सकता।

1.3 शालेय स्तर पर विषयों के प्रतिमान

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के निर्माण में रचनात्मक मूल्यांकन, संयुक्त मूल्यांकन आवश्यक कारक है। मूल्यांकन में विषय ज्ञान की समीक्षा कई विषय जैसे प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित भाषा जैसे विषय ज्ञान पर आधारित है।

हम इसे एक-एक विषय के साथ चर्चा करके प्रस्तुत करेंगे।

शालेय स्तर पर विषयों के प्रतिमान –

प्रस्तुत विषय को सामाजिक, राजनैतिक विश्लेषण के आधार पर मूल्यांकन के लिए हम सामाजिक अध्ययन के विषय पर चर्चा करेंगे।

निम्न माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के अनुशासन के लिए प्रतिमान –

इस स्तर की कक्षाओं में 6, 7 एवं 8 शामिल है।

इस विषय के अंतर्गत विद्यार्थियों को कुछ सर्वेक्षण दिये जाने चाहिए जिसे वे स्वयं आयोजित कर सकें। इसके अंतर्गत निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

- ❖ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक इकाई के रूप में परिवार का अध्ययन।
- ❖ जलवायु
- ❖ कृषि
- ❖ व्यवसाय एवं उद्योग
- ❖ वाणिज्य एवं संबंधित व्यवसाय
- ❖ जनसंख्या का वितरण
- ❖ परिवहन
- ❖ सामुदायिक स्वच्छता
- ❖ स्थानीय राजनीति व्यवस्था

II खाद्य – उसमें निम्न विषयों का समावेश किया जा सकता है।

- ❖ खाद्य उत्पादन के प्रकार
- ❖ स्थानीय फसलों का विश्लेषण
- ❖ लोगों की जीवन शैली

इस संदर्भ में सर वेंकट रमन, जार्ज वांशिगटन, कार्बर ने कई शोध कार्य किये हैं और किसानों के जीवन विकास को भी विस्तृत किया है।

- ❖ आधुनिक खाद्य समस्या

❖ सिंचाई प्रणाली

III अलग-अलग उम्र के लोगों उनके स्थानों, घरों, उनकी निर्माण प्रक्रिया आदि को विश्लेषित किया है।

IV पोशाक— स्थानीय जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार राष्ट्रीय एवं प्राचीन भारत की पोशाक एवं कपड़ों को उपयोग में लाया जा रहा है।

V ऊर्जा – छात्रों को निम्न विषयों के साथ भी परिचित होना चाहिए –

➤ जनशक्ति

➤ परमाणु शक्ति

➤ वाष्प ऊर्जा

➤ जल ऊर्जा

➤ पशु शक्ति आदि

VI मशीनरी – भारत में औद्योगिक क्रांति के लिए प्राचीन काल से उद्योगों के विकेंद्रीकरण में आदिम उपकरण, लकड़ी, लोहे और स्टील के उपकरण लोहा और इस्पात के उत्पादन, बुनियादी उद्योग का प्रयोग किया जाता है।

VII प्राकृतिक क्षेत्रों के दृष्टिकोण से भोजन, कपड़ा, मकान, ऊर्जा, मशीनरी और परिवहन आदि क्षेत्रों का अध्ययन किया जाना चाहिए।

VIII परिवहन – प्राचीन काल में एवं आधुनिक काल में मानव जीवन पर परिवहन और संचार के साधनों का प्रभाव व्यक्ति के सामाजिक विकास पर पड़ा है।

IX व्यापार

X सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन – सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भारतीय इतिहास की संस्कृति पर गुप्ता संस्कृति, राजपूत संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, पश्चिमी संस्कृति, आदि का प्रभाव पड़ता है। भारतीय इतिहास के अलग-अलग उम्र में सामाजिक जीवन भारतीयों का वर्तमान सामाजिक जीवन, सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी जातियों के उत्थान आदि में भिन्न-भिन्न संस्कृति का प्रभाव पड़ा।

XI राजनीतिक व्यवस्था

XII वर्तमान घटनाएँ

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का मानवीय जीवन के क्षेत्र में प्रभाव –

कक्षा नौवीं के स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत इतिहास विषय का ऐतिहासिक मूल्यांकन –

- ✓ एक प्रागैतिहासिक उम्र : पृथ्वी पर जीवन, पूर्व पाषाण काल, मध्य पाषाण युग, नवपाषाण युग का आरंभ।
- ✓ कांस्य युग की सभ्यता : इडप्पा सभ्यता, मेसोपोटामिया सभ्यता, मिस्त्र सभ्यता।
- ✓ प्राचीन लौह युग की सभ्यता : 1200 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व के बारे में, भारत की प्राचीन सभ्यता, इरानी सभ्यता, यूनानी सभ्यता, रोमन सभ्यता, यहूदी धर्म, इसाई धर्म की सभ्यता का भी ऐतिहासिक मूल्यांकन।
- ✓ विदेशी सभ्यता : प्राचीन संस्कृतियों में अमेरिका और अफ्रीका की पुरानी सभ्यता।

- ✓ मध्यकालीन युग: मध्यकालीन यूरोप, मध्ययुगीन यूरोप, अरब सभ्यता, भारत में मध्यकालीन युग, मध्ययुगीन चीन में यूरोप, व्यापार और वाणिज्य में पूँजीवादी व्यवस्था।
- ✓ आधुनिक युग का आरंभ – पुनर्जागरण, कला, साहित्य और विकास, प्रोटेस्टेंट धार्मिक सुधार आंदोलन नई खोजों और व्यापार, राष्ट्र-राज्य और विकास, अंग्रेजी क्रांति का उद्देश्य।
- ✓ औद्योगिक क्रांति – मशीन युग के प्रारंभ में औद्योगिकरण के परिणाम।
सामाजिक अध्ययन विषय के अंतर्गत नागरिक शास्त्र विषय का ऐतिहासिक मूल्यांकन
- ✓ एक व्यक्ति के रूप में सम्मान।
- ✓ एक नागरिक के रूप में व्यक्ति
- ✓ एक राष्ट्र के रूप में भारत
- ✓ स्थानीय स्तर पर सरकारी विकास
- ✓ सामाजिक –आर्थिक चुनौतियाँ।

सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत भूगोल विषय का ऐतिहासिक मूल्यांकन –

- ✓ पर्यावरण
- ✓ वातावरण
- ✓ पृथ्वी के बदले हुए रूप (चेहरे)
- ✓ जलवायु और वनस्पति

- ✓ प्रकृति एक उपहार
- ✓ भूतल
- ✓ आधुनिकीकरण कृषि – मुख्य फसलें।
- ✓ जनसंख्या
- ✓ परिवहन एवं व्यापार
- ✓ खनिज और बिजली संसाधन
- ✓ मनुष्य एवं पर्यावरण
- ✓ बुनियादी मानव व्यवसाय
- ✓ प्राकृतिक क्षेत्र, मानसून क्षेत्र
- ✓ भूमध्य क्षेत्र
- ✓ रेगिस्तान
- ✓ पश्चिमी यूरोप का क्षेत्र
- ✓ भौगोलिक विकास
- ✓ जम्मू टुंड्रा क्षेत्र

आपके प्रगति की जांच

टिप्पणी –

अ प्रत्येक अंश के बाद आप जगह देकर अपने उत्तर को लिखें।

ब इकाई के अंत में जो उत्तर है उसकी तुलना अपने उत्तर से करें।

1. शालेय विषयों के ज्ञान के महत्व को स्पष्ट करते हुये अन्य विषयों के सामाजिक विश्लेषण पर प्रकाश डालिए।

1.4 विषयों का विश्लेषण मूल्यांकन एवं विषयांतर्गत ज्ञान की आलोचना –

- ✓ 1.4.1 प्राकृतिक विज्ञान एवं गणित
- ✓ 1.4.2 इतिहास
- ✓ 1.4.3 भूगोल
- ✓ 1.4.4 शिल्पकारिता
- ✓ 1.4.5 भाषा

प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान गणित और भाषा विषय का विश्लेषण एवं विषयांतर्गत ज्ञान की आलोचना –

1.4.1 प्राकृतिक विज्ञान एवं गणित

किसी भी विषय को गणित के अभाव में नहीं सोचा जा सकता। गणित सभी विषयों के लिए बहुत जरूरी है। प्राकृतिक विज्ञान के सबसे समीपस्थ गणित है। गणित प्राकृतिक विज्ञान की भाषा है यह कहना गलत नहीं होगा। अन्य विषयों का भी ज्ञान प्राप्त करना है तो प्राकृतिक विज्ञान एवं गणित विषय को समझना होगा। बीजीय अनुपात, रेखांकन, ज्यामितीय सांख्यिकी आदि विज्ञान के उपयोग साधन है। वैज्ञानिक डेटा गणितीय समस्याओं के प्रदर्शन हेतु प्रस्तुत किया जा सकता है। गणित और प्राकृतिक विज्ञान के समन्वय की गणना में उपर्युक्त साधनों को प्रयुक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए गर्मी (ऊष्मता) के विशिष्ट एवं साधारण लक्षण को वर्ग अनुपात से संबंधित समस्याओं में इस्तेमाल किया जा सकता है। प्राकृतिक विज्ञान की प्रयोगात्मक

विषयों से मिली सामग्री ग्राफ अवधारणाओं में प्रयुक्त की जाती है। त्रिकोणमिति की अवधारणाओं को षष्ठक से समझाया जा सकता है। जीव विज्ञान के तहत जीवन की गति विधियों के निष्कर्षों का वर्णन करने में तथा रासायनिक संश्लेषण, रासायनिक सूत्र आंतरिक संरचना में गणित ज्यामिती सहायक है। इसी तरह यदि हम इसका विश्लेषण एवं मूल्यांकन करें तो उपरोक्त कई बातें सामने आती हैं चाहे वह फूल का वर्णन करने में, जीव विज्ञान के तहत मेंडल नियम का ज्ञान करने में आदि। विज्ञान व अन्य विषयों में ऐसा कोई पहलू नहीं है जहाँ गणित उपस्थिति दर्ज ना करता हो।

1.4.2 हम सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत भूगोल को प्राकृतिक विज्ञान के सामाजिक-राजनैतिक विश्लेषण के लिए ले सकते हैं।

यदि हम दोनों विषयों का मूल्यांकन करें तो हमें यह ज्ञात होगा कि ये दोनों विषय एक दूसरे के अत्यन्त निकटतम हैं। दोनों विषयों का संबंध पर्यावरण विषय के साथ है। भूगोल के उदाहरण जैसे चट्टानों, मिट्टी, सौर प्रणाली और विज्ञान में मौसम की नमी, पौधों और पशुओं के जीवन चक्र से दानों ही एक दूसरे पर निर्भर हैं। हाइड्रोमीटर, बैरोमीटर, थर्मामीटर आदि भौगोलिक उपकरण प्राकृतिक विज्ञान से मिले परिणामों को विश्लेषित करते हैं तथा साथ ही हवा का दबाव, तापमान, आर्द्रता, वर्षा आदि के माप में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। दोनों विषयों के अंतर्गत हम मिट्टी के प्रकारों को ले सकते हैं। यदि दोनों विषयों का मूल्यांकन करें तो ये दोनों विषय एक ही हैं। पौधे, जनसंख्या घनत्व, मानव आदि दोनों विषयों के ही उदाहरणों को ले तो हम इन विषयों को विश्लेषित कर मूल्यांकन किया जा सकता है। चलिए हम कुछ उदाहरणों को ले –

- ❖ विभिन्न राज्यों में रहने वाले लोगों की जीवन शैली में परिवर्तन को प्राकृतिक एवं भूगोल विषय के सहसंबंधों द्वारा समझाया जा सकता है।
- ❖ गर्मी के क्षेत्रों में लोग कम कपड़े पहनते हैं और ठंडा क्षेत्र के लोग उनी कपड़े क्यों पहनते हैं, इन मौसमों को समझाया जा सकता है।

- ❖ टुंड्रा क्षेत्र में भालू और लोमड़ी की तरह मोटी खाल के प्राणी क्यों पाये जाते और ऊँट रेगिस्तान में अधिक उपयोगी क्यों हैं?

इस सभी समस्याओं का वैज्ञानिक तथ्यों और सिद्धांतों के आधार पर जवाब दिया जा सकता है।

1.4.3 आमतौर पर, इतिहास अतीत के साथ एवं विज्ञान वर्तमान के साथ संबंधित है इसलिए इसके विश्लेषण में हम यह कह सकते हैं कि विज्ञान और इतिहास के मध्य कोई रिश्ता प्रतीत नहीं होता है। इतिहास विषय में हम घटनाओं का विश्लेषण करते हैं तथा विज्ञान के विषय में प्रभाव को देख सकते हैं। आविष्कार एवं खोज के विस्फोट ने इतिहास के पाठ्यक्रम को बदल दिया है। हम सांस्कृतिक इतिहास पर विज्ञान के प्रभाव को देख सकते हैं। प्राकृतिक विज्ञान ने इतिहास के निष्पक्षता और सच्चाई को साबित कर दिया है। इतिहास वैज्ञानिक खोज एवं अन्वेषण से संबंधित घटनाओं का उल्लेख करने के लिए बहुत उपयोगी है। कुछ शासनकाल के दौरान शासकों ने इसके विस्तार के लिए अन्वेषण और आविष्कारों को महत्वपूर्ण माना और इसके लिए धन और सुविधाएँ भी प्रदान की। आर्कमिडीज का सिद्धांत इसका एक उदाहरण है। पृथ्वी की कहानी, आदमी की कहानी एवं पहिये की कहानी विज्ञान एवं इतिहास विषय के बीच के संबंध को मजबूत बनाता है। दो विश्व युद्धों के दौरान वैज्ञानिक उपलब्धियों ने काफी हद तक मानवी जीवन को प्रभावित किया है।

1.4.4 प्राकृतिक विज्ञान एवं शिल्पकारिता – शिल्पकारी का विषय ज्ञान बिना किसी वैज्ञानिक उपकरण से पूर्ण नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए धातु एवं लकड़ी से संबंधित कलाकृति वैज्ञानिक मॉडलों एवं शिक्षण दृश्य श्रृंखला सामग्री के सभी प्रकार के साथ उपयोग में लाया जा सकता है तथा सभी उपकरण को तैयार करने में आवश्यक है।

शिल्प के विभिन्न प्रकारों ने वैज्ञानिक उपकरणों के इस क्षेत्र में क्रांति ला दी है। वर्तमान में वैज्ञानिक तथ्यों और सिद्धांतों को उपयुक्त सामग्री के चयन में प्रयुक्त किया

जाता है रसायनिय एवं धातुओं के भौतिक गुणों का ज्ञान शिल्प के शिक्षण में उपयोगी हो सकता है।

इसी तरह, वैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग के क्षेत्र में शिल्पकारिता ने क्रांति ला दी है। वर्तमान में उपयुक्त सामग्री के चयन में वैज्ञानिक तथ्यों और सिद्धान्तों का व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है।

1.4.5 प्राकृतिक विज्ञान और भाषा – भाषा का उपयोग हम संप्रेषण में एवं अभिव्यक्तिकरण में करते हैं। यदि हमारा भाषा पर उचित नियंत्रण नहीं है तो हम किसी भी विषय को नहीं सीखा सकते हैं। एक वैज्ञानिक अपने क्षेत्र में विद्वान हो सकता है लेकिन भाषा के ज्ञान के अभाव में सफल नहीं हो पाता। वास्तव में भाषा सभी विषयों के विस्तार में मददगार साबित होती हैं। किसी भी विषय की उपलब्धि को सीमित भाषा क्षमता के साथ प्राप्त नहीं किया जा सकता। अर्थात् अन्य विषयों की प्रगति का स्तर भाषा के अभाव में बाधित हो सकता है।

भाषा किसी भी साहित्य का माध्यम है और समाज का प्रतिबिम्ब है। जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के कई पहलुओं को उजागर कर सकते हैं। शिक्षक के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपकरण है। शिक्षक भाषा के माध्यम से केवल व्याकरण नहीं सीखाता बल्कि हमारे देश की सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण सीखने के लिए वातावरण भी प्रदान करता है। भाषा सभी विषयों को अपनी ओर आकर्षित करती है। उपरोक्त सभी भाषा विषयों हेतु हम कुछ क्रियाकलाप कर सकते हैं जो निम्नलिखित हैं।

| | | |
|-------------------|---|-----------------------|
| विषय-ज्ञान | संसाधन क्षेत्र की योजना | क्रियाकलापों का आयोजन |
| प्राकृतिक विज्ञान | हमारे आस-पास का व्याख्यान , अनौपचारिक, वातावरण वन विभाग, जीव बातचीत कार्यक्रम, जंतु, रसायन क्षेत्र पर्यावरणीय सुरक्षा | |

| | | |
|-----------------|--------------------------------------|---|
| गणित | सामान्य एवं मौलिक जानकारी | व्याख्यान उदाहरण देकर सूत्रों का प्रयोग कहानी के माध्यम से गणित की समझाना |
| सामाजिक विज्ञान | मानवीय-जीवन | ऐतिहासिक यात्रा, क्षेत्रीय दौरा, व्यक्ति-इतिहास, सामुदायिक मूल्यों की सुरक्षा |
| भाषा | संप्रेषण, अभिव्यक्तिकरण, भाषायी कौशल | भाषा के सभी विधाओं को सृजनात्मक रूप से ग्रहण करना। |

प्रगति जांच –

टिप्पणी – प्रत्येक प्रश्न के उत्तर लिखने हेतु जगह दी गयी है।

❖ इकाई में जो उत्तर है उसकी तुलना अपने उत्तर से करें।

2. विषय-ज्ञान का अन्य विषयों के साथ तुलना कर अपने शब्दों में लिखें।

3. व्यवहारिक जीवन में गणित विषय का प्रयोग हम किस रूप में कर सकते हैं विस्तारित कीजिए।

1.5 भौक्षिक विषयों का मूल्यांकन एवं समीक्षा –

आज का युग आधुनिक विज्ञान का युग है जो समाज में सामाजिक अध्ययन, भाषा, गणित, प्राकृतिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से भरा पड़ा है इससे व्यक्ति समाज और उनकी वृद्धि एवं विकास के क्रम को समझने के लिए सभी विषय आवश्यक हैं। सभी विषयों के अलग-अलग नियम, सूत्र हैं, जिसकी उपयोगिता शोध के क्षेत्रों में भी होती है। जैसे युद्ध के लिए हथियार, विज्ञान में प्रणालियों का विनिर्माण, भाषा में श्रवण भाषण, वाचन, लेखन कौशल, गणित में उसका व्यावहारिक प्रयोग आदि विषय समाज के लिए उपयुक्त हैं। टी.वी. रोडियो, फिल्म, मोबाईल आदि विज्ञान की देन हैं परन्तु उसका मानव जीवन पर प्रभाव सामाजिक अध्ययन का विषय है। विज्ञान की तकनीकी का प्रयोग करने के लिए भाषा उपयोगी है। साथ ही गणित भी मानव जीवन में उतना ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है जितना अन्य विषय। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गणित की जरूरत होती है यह केवल वित्तीय लेन-देन के लिए नहीं किया जाता है बल्कि यह सामाजिक उपयोगिता के माप के लिए भी सार्थक है। गणित का प्रयोग करके समाज के सभी सदस्य अपने सामाजिक जीवन एवं वास्तविक जीवन की स्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। उदाहरण एक छात्र जिसके पास गणित विषय का ज्ञान है वह शाला और घर के खर्च में बजट बनाने, पोस्ट ऑफिस बैंक में बचत खाते को समझने के लिए कार्यरत हो सकता है। साथ ही ग्राम पंचायत एवं नगर पालिकाओं के बजट को प्रत्येक स्तर पर समझ सकता है। साथ गणित सभी सामाजिक समस्याओं को समझने एवं विश्लेषित करने में उपयोगी है।

अतः हमने विषय के ज्ञान का मूल्यांकन उसका सामाजिक विश्लेषण एवं समालोचना को समझने का प्रयत्न किया है।

प्रगति जाँच –

टिप्पणी

- प्रत्येक प्रश्न के उत्तर लिखने हेतु जगह दी गयी है।
- इकाई में उत्तर की तुलना अपने उत्तर से करें।

1. शालेय-विषयी ज्ञान की समालोचना अपने शब्दों में करें।

1.6 सारांश –

इस इकाई के अंतर्गत हमने विषयी ज्ञान के मूल्यांकन को समझा जिसे बच्चे अपने रोजमर्रा के जीवन में इसे समाहित कर सकते हैं। परिस्थिति के अनुसार एवं विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के अनुसार अधिगम को सुगम बनाया जाता है और प्रश्नों को पुछने, प्रयोग, अभिव्यक्त करने, चर्चा, वाद-विवाद, अनुभव एवं खोज के माध्यम से विद्यार्थियों को अनेक अवसर प्राप्त होते हैं जिससे वे अधिगम को प्राप्त कर सकें। इस इकाई में शालेय विषयों प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित एवं भाषा के मूल्यांकन, विश्लेषण, समालोचना आदि को उदाहरण के साथ समझाने की कोशिश की गई है यह स्पष्टीकरण आपकी कक्षा में उपचारात्मक एकरूपता को दर्शाता है जिससे

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मदद हो सकती है और हम विद्यार्थियों को खोज करने के लिए प्रेरित कर उन्हें अवसर प्रदान किया जा सकता है।

1.7 चिंतन हेतु प्रश्न –

- ❖ क्या आप सोचते हैं कि विषयों के ज्ञान में मूल्यांकन जरूरी है। क्यों?
- ❖ आप अपने सहकर्मियों से शाला में चर्चा करें एवं शालेय ज्ञान की विषय वस्तु को पहचान कर आप उसे हमारे अधिगम प्रक्रिया के साथ कैसे एकरूप कर सकते हैं?
- ❖ शालेय विषयों की आलोचना एवं विश्लेषण का विद्यार्थियों के अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
- ❖ इस प्रक्रिया में सूचना संप्रेषण तकनीकी (ICT) किस तरह सहायक है? उदाहरण देकर चर्चा करें।
- ❖ शालेय विषय क्या हमारे दैनिक जीवन में सहायता प्रदान करते हैं? आप इस वाक्य से सहमत हैं ? कारण दीजिये।

1.8 प्रगति जाँच के उत्तर

- प्र. 1 के लिए कृपया 1.3 को देखें।
- प्र. 2 के लिए कृपया 1.4 को देखें।
- प्र. 3 के लिए कृपया 1.5 को देखें।

1.9 संदर्भ ग्रंथ

- Gandhi, A.K. and Maisnam P. (2016). Understanding disciplines and subjects, Vinay Rakheja Publisher, Meerat.

- स्नेहलता चौधरी (2007). पाठ्यक्रम में भाषा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।